

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय  
इलाहाबाद

वर्ग संख्या..... २५०८  
पुस्तक संख्या..... बाल!न-५  
क्रम संख्या..... ५२५

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय  
इलाहाबाद

वर्ग संख्या..... २५०८  
पुस्तक संख्या..... बाल!न-५  
क्रम संख्या..... ५२५

श्रीमती श्रीमती

# गद्य कल्प

( दीर्घकालीन कृति-विधाओं का संकलन )

श्री ब्रजमोहन गुप्त 'इन्द्रनारायण'



... (The following text is extremely faint and largely illegible due to the quality of the scan. It appears to be a multi-paragraph document.) ...



... (The text below the image is also extremely faint and illegible, continuing the document's content.) ...

---

प्रथम संस्करण : १९८८

प्रकाशक :

साहित्यवाणी,  
२८ पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद।

आवरण एवं सज्जा :

अशोक सिद्धार्थ

संपादक : लक्ष्मीनारायण दुबे

Edition 1988

BALKRISHNA SHARMA 'NAVIN' GADYA RACHANAVALI  
Published by SAHITYAVANI, 28, Purana Allahapur, Allahabad

मूल्य : रु० ६००.००

सम्पूर्ण ग्रंथावली

मुद्रक :

पियरलेस प्रिंटेर्स,  
बाई का बाग, इलाहाबाद।

जिल्दबंदी :

विश्वनाथ बुक बाइंडर्स,  
बैरहना, इलाहाबाद।

Edited by L.N. Dubey

Price Per set Rs. 600

---

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली, के आंशिक वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

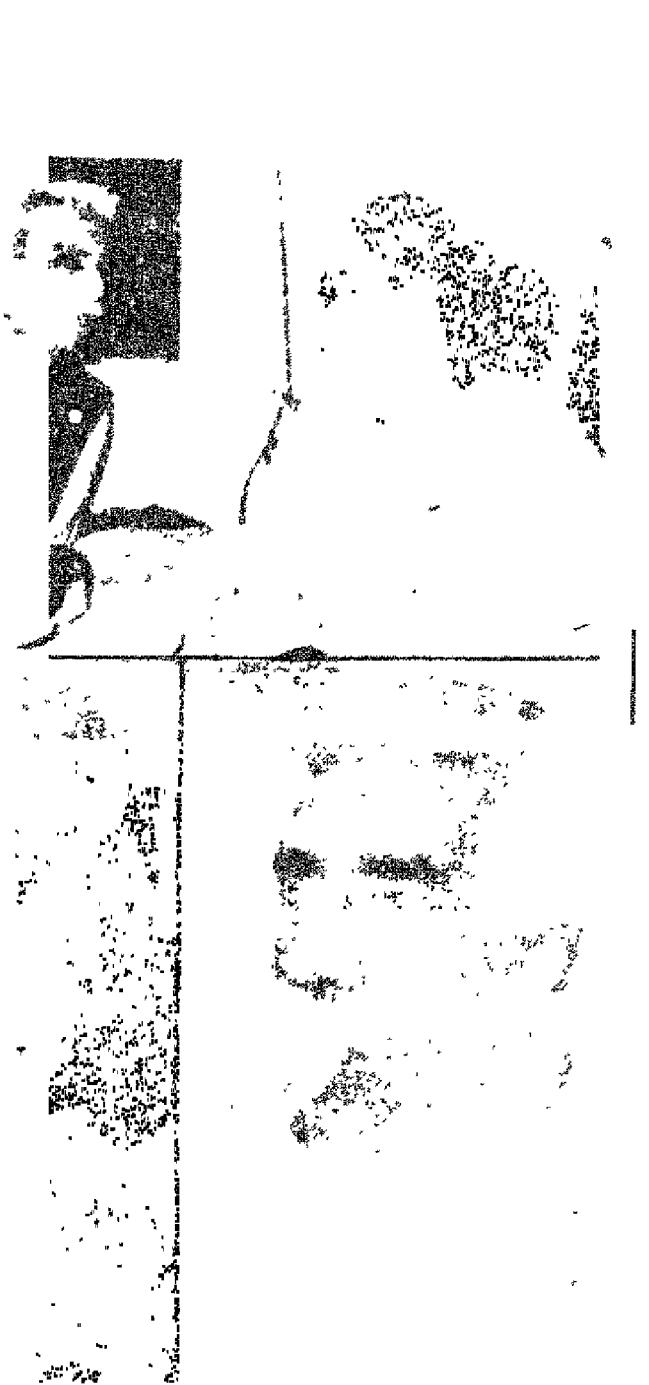
**साहित्यवाणी**

विद्या रावत

# लक्ष्मण शर्मा तवीण वाद्य रचनावली

विद्या रावत

Handwritten text, likely bleed-through from the reverse side of the page. The text is extremely faint and illegible due to the quality of the scan. It appears to be a list or a series of entries, possibly containing names and dates.



नवीन जी : खान-पान की अपनी शैली

क भारतीय आत्मा' और नवीन जी : मन की बातें





# राष्ट्रभाषा सर्वं व्याख्यात







Uttara

श्रीमान् काशीदास

द.

काशीपुर

19/2/41

2. शिव,  
मेरा पत्र

अब बोलिये तो किन्तु  
मैंने अभी तक नहीं देखा है  
आपका पत्र. कृपया  
मुझे चिठ्ठा भेजें और मुझे  
सब कुछ समझाने में मेरी सहायता करें  
कि मैं भी कुछ समझ सकूँ।

मेरा पत्र बहुत ही बुरा था,  
एक बड़ा बर्बाद. मैंने  
आपको बहुत ही दुःख  
दाया है. मैंने आपको  
बहुत ही दुःख दिया है.  
मैंने आपको बहुत ही  
दुःख दिया है. मैंने  
आपको बहुत ही दुःख  
दाया है. मैंने आपको  
बहुत ही दुःख दिया है.

यकृष्ण दास को लिखा गया पत्र

7

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

## अनुक्रम

### प्रथम प्रकरण / राष्ट्र-भाषा

17-44

हिन्दुस्तानी का प्रचार घातक है, हमारी राष्ट्रभाषा का प्रश्न, राष्ट्रभाषा संस्कृति का अविच्छेद्य अंग है, हिन्दी में परिभाषिक शब्दावली, भारतीय संविधान की भाषा-विषयक नीति का विरोध क्यों ? भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी ही है ।

### द्वितीय प्रकरण / भाषण एवं वक्तव्य

45-138

प्रथम राजनैतिक सम्मेलन जिला गजापुर ( राज्य खालियर ) के सभापति पं० बालकृष्ण शर्मा का भाषण, प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन : सभापति का भाषण, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति हमारा



कर्त्तव्य, नगर-कांग्रेस समिति, कानपुर में भाषण, ससस्त कांग्रेस जन में पूर्ण एकता आवश्यक, देशवासियों का राष्ट्रीय कर्त्तव्य, कानपुर में गांधी-श्राद्ध. हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है (वक्तव्य), खुश करने की अनुचित नीति, बापू का पथ, गांधी जयंती, संसदीय वाद-विवाद, मध्यभारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन के खालियर के प्रथम अधिवेशन का अध्यक्षीय भाषण, उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वस्ती अधिवेशन का अध्यक्षीय भाषण, 32 वें निखिल भारत वंग साहित्य सम्मेलन के हिन्दी साहित्य एवं कवि सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण ।

### तृतीय प्रकरण / अनुवाद

139-204

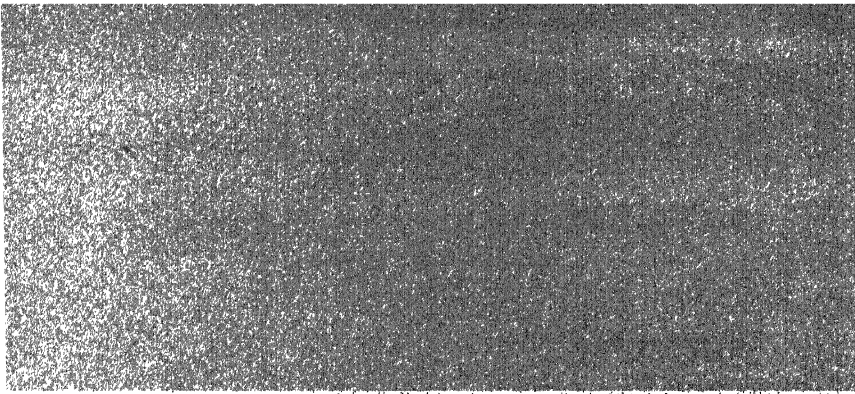
'हमारी संसद' (पुस्तक : 31 दिसम्बर, सन् 1957) : लेखक : श्री एम० अनन्त शयनम् अयंगर, अनुवाद : पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन,' । हमारा संविधान, हमारा भारत, हमारी राजधानी : दिल्ली, प्राचीन भारत में लोकतंत्र, हमारी संसद का विकास, संसद भवन, संसद का उद्घाटन, संसद की कार्य-विधि-1, 2 ।

### परिशिष्टावली

205-208

प्रथम परिशिष्ट : 'नवीन' जी के जीवन से संबंधित कुछ प्रमुख घटनाएँ (कालक्रमानुसार), द्वितीय परिशिष्ट : 'नवीन' जी की रचनाएँ, तृतीय परिशिष्ट : 'नवीन' संदर्भ साहित्य ।

□ □



Handwritten signature or text at the bottom of the page, possibly reading "C. H. B. 1914" or similar, with a decorative flourish underneath.